अमृत वाणी

दया सबसे बड़ा धर्म है।

– महाभारत

संपादकीय

नही थम रहा नेताओं का बड़बोलापन

हमारा देश आज हर क्षेत्र में तेजी से विकास के मार्ग पर अग्रसित हो रहा है। पूरी दुनिया में उसकी एक अलग पहचान बनी है, अलग प्रतिष्ठा है मगर चिंता की बात यह है कि हमारे ही कतिपय नेताओं व्दारा समय समय पर दिए गए विवादास्पद बयान और की जाने वाली छिछली टीका टिप्पणियां भारत की गरिमापूर्ण छबि को आहत कर देती हैं।

आश्चर्य इस बात पर होता है कि लोग ऊंचे और जिम्मेदाराना आसन तक तो पहुंच जाते हैं लेकिन वाणी में संयम बरतना और जिम्मेदाराना व्यवहार करना नही सीख पाते। उन्हें इस छोटी सी बात की समझ तक नही होती कि जब वे किसी ऊंचे पद पर रहते हुए कुछ बोलते हैं तब यह उनके व्यक्तिगत विचार नहीं बल्कि आसंदी का वक्तव्य माना जाता है।

गत दिवस मध्यप्रदेश के एक केबिनेट मंत्री ने जिस तरह से सेना के एक महिला अधिकारी के बारे में ओछी एवं जातिगत टिप्पणी की उससे बढ़कर दुखद और शर्मनाक बात शायद ही कुछ और हो सकती है। आज पूरा देश ऑपरेशन सिंदुर के तहत भारतीय सेना व्दारा दर्शाए गए पराक्रम की जयजयकार कर रहा है। स्वयं प्रधानमंत्री मोदी ने ऑपरेशन सिंदुर की भारी सफलता के बाद राष्ट्र के नाम अपने संबोधन में देश की सेना के काबिलियत को सलाम किया है और ये मंत्री महोदय उसी सेना पर विवादास्पद बयान देते नही हिचक रहे हैं। उन्हें शायद इतनी सी मूलभूत जानकारी भी नही है कि सेना और सैनिक किसी जाति धर्म, वर्ग या संप्रदाय के दायरे में नही आते। इस अनेकता में एकता हमारी विशिष्टता वाले देश के सारे जाति धर्म वर्ग और संप्रदाय के वीर सैनिक सेना में शामिल हैं जो हमारे देश का सबसे महत्वपूर्ण अंग या कहें भारत देश के रक्षक हैं। लड़ाई लड़ते समय सेना का कोई भी सैनिक अपनी जाति के लिए नही बल्कि अपनी मातृभूमि यानि भारत के लिए लड़ता है। एक मंत्री के मन में ऐसी छोटी सोच हो भी कैसे सकती है कि वे अपने किसी वीर सैनिक को आतंकवादियों से जोड़कर देखें। सार्वजनिक मंच पर ऐसा बड़बोलापन दिखाकर उन्होंने न केवल स्वयं को, अपने पद को, अपने राजनैतिक दल को बल्कि देश को कितना शर्मसार किया है उसका अंदाजा तो इस बात से लगाया जा सकता है कि स्वयं उच्च न्यायालय को उनके व्यवहार को संज्ञान में लेकर कार्यवाही का आदेश देना पड़ा लेकिन आश्चर्य इस बात पर होता है कि जिस विषय को लेकर समूचा देश उद्वेलित है, यहां तक कि अदालत भी गंभीर है, उस पर उनकी सरकार या उनके राजनैतिक दल व्दारा उनके खिलाफ कोई कार्यवाही करना तो दूर, पूरी तरह से मौन बनी हुई है।

बहरहाल उच्च न्यायालय ने इस बारे में अपने सख्त रुख का प्रदर्शन तो कर ही दिया है, अब देश को आगामी 19 मई को इस मुद्दे को लेकर सर्वोच्च न्यायालय में होने वाली सुनवाई और अंतिम फैसले की प्रतीक्षा है।

राज-काज

लड़कियों का बेहतर प्रदर्शन

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) द्वारा 12वीं और 10वीं कक्षा के मंगलवार को घोषित नतीजों में लड़कियों ने एक बार फिर लड़कों से बेहतर प्रदर्शन किया। पिछले साल की तुलना में इस साल 12वीं कक्षा की परीक्षा में 90 फीसद से ज्यादा अंक अर्जित करने वाले छात्रों की संख्या में मामूली कमी आई है। सीबीएसई के परीक्षा नियंत्रक संयम भारद्वाज ने बताया कि 12वीं में 88.39 फीसद उम्मीदवार परीक्षा में सफल हुए हैं, जबकि 10वीं कक्षा की परीक्षा 93 फीसद छात्र उत्तीर्ण घोषित किए गए हैं और लड़कियों के उत्तीर्ण होने का प्रतिशत लड़कियों से दो फीसद अधिक रहा। सीबीएसई की कक्षा 10 की बोर्ड परीक्षा में 93.66 फीसद परीक्षार्थी पास हुए हैं। इस बार भी बोर्ड ने मेरिट लिस्ट (मेधा सूची) जारी नहीं की यानी किस बच्चे ने टॉप किया और कौन बच्चा दूसरे, तीसरे नंबर पर रहा यह नहीं बताया गया। मेधा सूची जारी न करने के पीछे प्रमुख कारण बताया गया कि इससे बच्चों में बेवजह की प्रतिस्पर्धा देखने को मिलती है। सबसे ज्यादा चिंतनीय बात तो यह कि अनेक बच्चे इससे अहसासे कमतरी तक का शिकार हो जाते हैं।

भारत ने आतंकवाद के विरुद्ध लड़ाई का दुनिया के सामने प्रतिमान पेश किया

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की दो टूक प्रखर और समयानुकूल स्वाभाविक प्रखर आक्रामक तेवर और घोषणाओं के साथ भाव भंगिमाओं को देखने के बाद भारत के अंदर और पूरे विश्व में जिन्हें भी सीमा पार आतंकवाद जम्मू कश्मीर और भारत.पाकिस्तान संबंधों को लेकर कोई भ्रम रहा होगा वह दूर हो जाना चाहिए। अगर दूर नहीं होता है तो देशों की अपनी कुटिल नीति हो सकती है और भारत के अंदर मानसिक ग्रंथि। वास्तव में 10 मई को टकराव रुकने की सेना की दोनों महिला अधिकारियों तथा विदेश सचिव के वक्तव्य के बाद कम से कम भारत के अंदर आश्वस्ति होनी चाहिए थी। उसके बाद लगातार दो दिनों तक सेना के तीनों अंगों के तीन शीर्ष अधिकारियों ने जिस तरह बिंदुवार सुस्पष्ट और मुखर भाषा में सैन्य रणनीति और स्टैंड को सामने रखा उनसे साफ हो गया था कि ऑपरेशन सिंदूर के तात्कालिक लक्ष्य और उद्देश्य पूरे हो गए हैं किंतु पाकिस्तान के विरुद्ध केवल सैन्य कार्रवाई छोड़कर संपूर्ण रणनीति जारी है। प्रधानमंत्री अगर घोषणा कर रहे हैं कि टेरर के साथ टॉकए ट्रेड यानी आतंकवाद के साथ बातचीत और व्यापार नहीं चल सकता हैए पानी और खून एक साथ नहीं बह सकता है और उसके बाद अगर देश के अंदर कोई सोचता है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप या वहां के विदेश मंत्री के पोस्ट के आधार पर भारत की नीति चल रही है तो वैसे लोगों के लिए क्या शब्द प्रयोग किया जाए यह पाठक तय कर लें।

प्रधानमंत्री ने कहीं भी अपने संबोधन में सीजफायर यानी युद्धविराम शब्द का प्रयोग नहीं किया और इसके पूर्व सेना के प्रवक्ताओं ने भी नहीं किया। विदेश सचिव के वक्तव्य तब में भी यह शब्द नहीं था। प्रधानमंत्री के वक्तव्य से साफहै कि आतंकवाद और सैन्य दुस्साहस रोकने की पाकिस्तान द्वारा दी गई गारंटी के आधार पर ही ऑपरेशन सिंदूर और सेना का प्रतिप्रहार रुका तथा इस कसौटी पर उसके आचरण को देखकर ही भविष्य तय होगा। वास्तव में प्रधानमंत्री के वक्तव्य में मूल पांच बातें स्पष्ट थी। पहलाए पहलगाम हमले के बाद सीमा पार आतंकवाद और पाकिस्तान के संदर्भ में हमारा स्टैंड और पूरी सैन्य रणनीति कायम है। दूसरा पाकिस्तान के हमले के लगातार विफल होने और उनके सैन्य अड्डों के तवाह होने के बाद शांति की पहल उन्होंने की और भारत अपनी शर्तों पर इसे स्वीकार किया । यह देश के अंदर बनाए गए झूठे नैरेटिव का उत्तर था जो सेना के प्रवक्ताओं द्वारा पत्रकार वार्ताओं में पहले भी दिया जा चुका था। आत्महीनता की मानस वाले समूह इसे स्वीकारने की जगह अपनी ही नीति को कटघरे में खड़ा करने लगे ।अगर आतंकवाद हुआ तो कार्रवाई केवल आतंकवादियों और उनके अड्डों के विरुद्ध ही नहीं होगी इसे पाकिस्तानी सत्ता की भूमिका मानकर होगी। कोई भी समझ सकता है कि यह सीधी सीधी चेतावनी है । तीसराए अमेरिका सहित दूसरे देशों के लिए संदेश था कि यह संभव नहीं की आतंकवादी देश न्यूक्लियर ब्लैकमेल के आधार पर शांति की बात करें और हम स्वीकार कर लें। यानी मार पड़ने से डरा पाकिस्तान किसी देश के पास यह कहते हुए जाता है कि हम न्यूक्लियर अस्त्र का प्रयोग करेंगे और उसके आधार पर कार्रवाई रोकने या समझौता करने को कहा जाएगा तो स्वीकार नहीं होगा। ध्यान रखिएए भारत ने जिन वायु सेना अड्डों पर पाकिस्तान में कार्रवाई की उनमें माना जाता है कि उसके तीन न्यूक्लियर इंस्टॉलेशन के पास थे और वह घबरा गया कि अगर भारत यहां पहुंच सकता है तो आगे हमारे लिए इसका भी उपयोग करना संभव नहीं होगा। चौथाए अगर पाकिस्तान से कोई बातचीत होगी तो केवल पाक अधिकृत कश्मीर पर और आतंकवाद पर। यह भारत के अंदर विरोधियों और विशेषकर ट्रंप प्रशासन को उत्तर था जो जम्मू कश्मीर समस्या को सुलझाने और तटस्थ स्थान पर बातचीत करने का दंभ भर रहे थे। मोदी सरकार का यह स्टैंड पहले से क्लियर था। और पांचवांए हमारे स्वदेशी निर्मित विषयों और सैनिक उपकरणों ने जैसी सफलता प्राप्त की है उसके बाद कोई देश यह न सोचे कि युद्ध के दौरान हमको उनकी अपरिहार्यता रहेगी।

गहराई से देखें अमेरिका सहित पश्चिमी देशों को संदेश के साथ ही यह भारत की रक्षा सामग्रियों के अंतरराष्ट्रीय बाजार की एक बड़ी ब्रांडिंग थी। यानी हम भी प्रतिस्पर्धा में उतर गये हैं। आप भले किन्ही कारण से प्रधानमंत्री मोदी का सार्वजनिक विरोध करिए लेकिन किसी घटना को वे केवल तत्कालिकता में न देखकर उसके साथ दूरगामी और भविष्य के भारत के वैश्विक उद्देश्यों के आधार पर समग्र विचार कर सामने रखते हैं। देखा जाए तो भारत ने स्वयं को ऑपरेशन सिंदूर तथा उसके बाद प्रधानमंत्री के वक्तव्य से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक नेतृत्वकारी भूमिका वाले देश के रूप में प्रस्तुत किया है। अमेरिका की परेशानी यह भी हो गई कि अगर भारत इस तरह साहसिक सैन्य कार्रवाई करता रहा तो दुनिया के नेता का उसका स्थान खतरे में होगा और बड़ी संख्या में देश उसके साथ खड़े हो जाएंगे। तभी डोनाल्ड ट्रंप की भाषा भारत और पाकिस्तान दोनों के लिए समान थी। उन्होंने दोनों को महान देश बताया तथा दोनों के साथ सतत् व्यापार करने की भावना व्यक्त की। अचानक चीन के साथ व्यापार टकराव दूर करने के पीछे भी यही रणनीति हो सकती है।

प्रधानमंत्री को सारी बातें ध्यान में रही होगी और उसी अनुसार 22 अप्रैल के पहलगाम हमले के बाद पूरी तात्कालिक और दूरगामी सैन्य रणनीति ए कूटनीति ए अंतर्राष्ट्रीय व्यापार नीति और राजनीति निश्चित हुई है। प्रधानमंत्री ने अमेरिका और यूरोप को भी यह कहते हुए आईना दिखा दिया कि आपके यहां भी 11 सितंबरए 2001 के और ब्रिटेन में ट्यूब के हमले के पीछे भी यही बहावलपुर के जैश ए मोहम्मद और मुरीदके के लश्कर ए तैयबा केंद्र की भूमिका थी। यह सच है कि तब वैश्विक आतंकवाद के केंद्र में ये स्थल थे। ओसामा बिन लादेन खुन्नह्रआम इन स्थानों में तकरीरें . बैठकें करता थाए इनसे सीधे रिश्ते थे और अलकायदा एवं उसके द्वारा स्थापित इंटरनेशनल इस्लामिक फ्रंट के साथ सारे संगठन संबंद्ध हो गए थे। अगर प्रधानमंत्री कहते हैं कि उन्होंने हमारी माताओं . बहनों की मांगों के सिंदूर उजड़े तो हमने उनके अड्डों को ही उजाड़ दिया। साथ यह भी कि ऑपरेशन सिंदूर एक अखंड प्रतिज्ञा है। नहीं लगता कि इस समय विश्व का कोई भी नेता इतने खतरनाक पड़ोसी ए जिसके पास न्यूक्लियर अस्त्रागार हो और मजहबी उन्माद के आधार पर देश के बड़े वर्ग को मरने. मारने पर उतारू करने की विचारधाराए इस प्रकार के विचार और तेवर सामने रख सकता है । अब न केवल आतंकवादियों बल्कि उनको प्रायोजित करने वाले पाकिस्तान की सेना और संपूर्ण सत्ता को इस चेतावनी को गंभीरता से लेना होगा कि उन्हें आतंकवाद का इंफ्रास्ट्रक्चर ध्वस्त करना ही होगा। नहीं करेंगे तो फिर ऑपरेशन सिंदूर की विस्तारित प्रचंड हमले के लिए तैयार रहें और वह निर्णायक होगा।

वास्तव में ऑपरेशन सिंदूर सीमा पार ही नहीं वैश्विक आतंकवाद से संघर्ष के लिए भी विचारधारा और रणनीति दोनों स्तरों पर एक विशिष्ट मानक बना है। यह बताता है कि नेतृत्व के पास इसके पीछे की संपूर्ण सोच और योजनाओं की पूरी समझ होए प्रतिकार के लिए दीर्घकालिक सोच और रणनीति तथा उसे क्रियान्वित करने की संकल्पबद्धता और दृढ़ता हो तो पाकिस्तान जैसे दुष्ट देश को भी सबक सिखाया जा सकता है। प्रधानमंत्री ने साफकर दिया है कि आतंकवाद से पीड़ित विश्व शांति की बजाय इस रणनीति को अपनायें तथा भयभीत छोटे देश भारत के साथ आएं। कुल मिलाकर यहां से भारत की दक्षिण एशिया सहित संपूर्ण विश्व के आतंकवाद तथा कश्मीर जैसे मुद्दों के संदर्भ में विजय और समाधान के आत्मविश्वास से भरी निर्भीकए दूरगामी और तथा कमजोर देशों के लिए नेतृत्वकारी भूमिका सामने आई है। इस तरह ऑपरेशन सिंदूर के साथ भारत एक ऐसे नए दौर में प्रवेश का संदेश दे चुका है जहां उसकी स्वयं की सुरक्षाए आत्मनिर्भरता तथा वैश्विक शांति की उसकी अपनी दृष्टि सर्वोपरि है और किसी देश का इसके परे सुझाव या साथ उसे स्वीकार नहीं।

अवधेश कुमार

(ये लेखक के अपने विचार है)

नेताओं के बिगड़े बोल से आहत होती राष्ट्रीयता

सेना के शौर्य पर सम्मान की बजाय अपमान के बिगड़े बोल को लेकर राजनीतिक घमासान छिड़ जाना स्वाभाविक है। कर्नल सोफिया और विंग कमांडर ब्योमिका सिंह के संबंध में क्रमशः मंत्री विजय शाह और सपा महासचिव राम गोपाल यादव द्वारा की गई टिप्पणियों पर राजनीतिक विवाद और कानूनी कार्रवाई की मांग तेज हो गई है। बड़ा प्रश्न है कि क्या धर्म और जाति के नाम पर वोट के लिए सेना और सेना से जुड़ी बेटियों के सम्मान को चोट पहुंचाई जाना उचित है? चाहे सत्ता पक्ष हो या विपक्ष वाणी का संयम अपेक्षित है। भारतीय राजनीति में बिगड़े बोल, असंयमित भाषा एवं कड़ावपन की मानसिकता चिन्ताजनक है। ऐसा लगता है ऊपर से नीचे तक सड़कछाप भाषा ने अपनी बड़ी जगह बना ली है। यह ऐसा समय है जब शब्द सहमे हुए हैं, क्योंकि उनके दुरूपयोग की घटनाएं लगातार जारी हैं।

जब देश पहलगाम की त्रासद घटना एवं उसके बाद पाकिस्तान से बदला लेने की शौर्य की महत्वपूर्ण घटना के मोड़ पर खड़ा है, तब कुछ नेताओं के बिगड़े बोल बहुत दुखद और निंदनीय हैं। मध्य प्रदेश में भाजपा सरकार के एक मंत्री विजय शाह एवं समाजवादी पार्टी के रामगोपाल यादव के खिलाफ गुस्सा बढ़ता जा रहा है। विजय शाह को राज्य मंत्रिमंडल से हटाने की मांग तेज हो गई है। कर्नल सोफिया कुरैशी के खिलाफविजय शाह की विवादास्पद टिप्पणी एक ऐसा दाग है, जिसे आसानी से नजरंदाज नहीं किया जा सकता। यह मामला सर्वोच्च न्यायालय तक पहुंचा और मामला भी दर्ज हो गया, तो आश्चर्य नहीं । देश के नेताओं व मंत्रियों को ऐसी हल्की और स्तरहीन बातों से परहेज करना चाहिए। नफरती सोच एवं हेट स्पीच का बाजार बहुत गर्म है। राजनीति की सोच ही दूषित एवं घृणित हो गयी है। नियंत्रण और अनुशासन के बिना राजनीतिक शुचिता एवं आदर्श राजनीतिक मूल्यों की कल्पना नहीं की जा सकती। नीतिगत नियंत्रण या अनुशासन लाने के लिए आवश्यक है सर्वोपरि राजनीतिक स्तर पर आदर्श स्थिति हो, अनुशासन एवं संयम हो, तो नियंत्रण सभी स्तर पर स्वयं रहेगा और इसी से देश एक आदर्श लोकतंत्र को स्थापित करने में सक्षम हो सकेगा। युद्ध जैसे माहौल में सेना एवं उसके नायकों का मनोबल बढ़ाने की बजाय उनके साहस एवं पराक्रम पर छींटाकशी करना दुर्भाग्यपूर्ण है। चर्चा में बने रहने के लिए ही सही, राजनेताओं के विवादित बयान गाहे-बगाहे सामने आ ही जाते हैं, लेकिन ऐसे बयान एक ऐसा परिवेश निर्मित करते हैं जिससे राजनेताओं एवं राजनीति के लिये घृणा पनपती है। यह सही है कि शब्द आवाज नहीं करते, पर इनके घाव बहुत गहरे होते हैं और इनका असर भी दूर तक पहुंचता है और देर तक रहता है। इस बात को राजनेता भी अच्छी तरह जानते हैं इसके बावजूद जुबान से जहरीले बोल सामने आते ही रहते हैं।

यह चिंताजनक है कि इधर के वर्षों में कुछ भी बयान दे देने की बुरी आदत बढ़ रही है। बिगड़े बोल वाले नेता बेलगाम हो रहे हैं। कोई दो राय नहीं कि पहले राजनीतिक दलों और उसके बाद सरकारों को इस मोर्चे पर अनुशासन एवं वाणी संयम का बांध बांधना चाहिए । विजय शाह करीब आठ बार चुनाव जीत चुके हैं, मतलब, अनुभवी नेता हैं, तो क्या वह चर्चा में रहने के लिए बिगड़े बोल का सहारा लेते हैं? सर्वोच्च न्यायालय में खिंचाई के बाद अब वह सफाई देने में लगे हैं। उन्होंने स्पष्टीकरण जारी करते हुए कहा है कि उनकी टिप्पणियों को संदर्भ से बाहर ले जाया गया और उनका मकसद कर्नल कुरैशी की बहादुरी की प्रशंसा करना था। उन्होंने यह भी कहा कि कर्नल सोफिया कुरैशी मेरी सगी बहन से भी बढ़कर हैं। वह माफी भी मांग रहे हैं, तो साफहै कि उनका पद खतरे में है। अगर वह पहले ही सावधानी बरतते या गलती होते ही माफी मांग लेते, तो मामला इतना नहीं बढ़ता। विजय शाह का मामला थमा भी नहीं है कि मध्य प्रदेश के ही उप- मुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा ने भी बिगड़े बोल को अंजाम दे दिया है। उनका मानना है कि देश की सेना प्रधानमंत्री के सामने नतमस्तक है। वास्तव में, ऐसी गलतबयानी से किसी के भी सम्मान में वृद्धि नहीं होती है। देश अभी-अभी एक संघर्ष से निकला है। यह एकजुटता और परस्पर समन्वय बढ़ाने के लिए संभलकर बोलने का समय है। राष्ट्रीय एकता एवं राजनीतिक ताने-बाने को ध्वस्त कर रहे जहरीले बोल की समस्या दिन-प्रतिदिन गंभीर होती जा रही है।

ललित गर्ग

(ये लेखक के अपने विचार है)

विराट कोहली का टेस्ट क्रिकेट से सन्यास

अपने 14 साल के टेस्ट कॅरियर में देश को तमाम उपलब्धियां दिलाने वाले विराट कोहली ने टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लेकर सभी को स्तब्ध कर दिया है। कुछ दिनों पहले उनके लाल गेंद से अभ्यास करने की खबरें आ रही थीं।

इस फैसले की किसी को उम्मीद नहीं थी। विराट के संन्यास लेने से एक युग की समाप्ति हो गई है। वह सचिन तेंदुलकर की तरह अपना युग कायम करने में सफल रहे। ऐसा कोई खिलाड़ी अपने कॅरियर को विराम देता है, तो क्रिकेटप्रेमियों के दिल टूटते ही हैं। विराट ने सचिन तेंदुलकर के संन्यास से खाली हुई जगह को भरा था। विराट के संन्यास लेने से खाली हुई जगह को कौन भरेगा, यह तो आने वाला समय ही बताएगा। विराट ने 123 टेस्ट खेल कर इसकी 210 पारियों में 9230 रन बनाए जिनमें 30 शतक शामिल रहे। उनका औसत 46.85 का रहा।

महान क्रिकेटर सुनील गावस्कर ने कुछ समय पहले कहा था कि विराट 10,000 टेस्ट रन पूरे करने वाले चौथे भारतीय बनेंगे। इससे पहले गावस्कर, सचिन और द्रविड़ इसे पा चुके हैं पर वह इस कीर्तिमान से 770 रन दूर रह गए। गावस्कर कहते हैं कि कोई भी खिलाड़ी जब खेलना शुरू करता है तो उसे खेलने में लुत्फ आता है, और यह लुत्फ उसे अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट खेलने तक आता रहता है। लेकिन जब खिलाड़ी का लुत्फ आना बंद हो जाता है, तो वह संन्यास जैसा फैसला करता है।

गावस्कर कहते हैं कि लुत्फ नहीं आने के कई कारण हो सकते हैं। विराट के साथ भी ऐसा कुछ हुआ होगा। विराट ने इंस्टाग्राम पर संन्यास की घोषणा करते हुए लिखा, टेस्ट क्रिकेट में पहली बार बैगी ब्ल्यू पहने 14 साल हो गए हैं। सच कहूं तो मैंने कभी नहीं सोचा था कि यह प्रारूप मुझे किस सफर पर ले जाएगा। अब जब मैं खेल के इस प्रारूप से दूर जा रहा हूं, जो आसान नहीं है। मैं इसे अपना सब कुछ दिया और इसने मुझे उम्मीदों से कहीं ज्यादा दिया। मैं हमेशा अपने टेस्ट कॅरियर को मुस्करा के देखूंगा। इसने मुझे परखा, आकार दिया और ऐसे सबक सिखाए जिन्हें जीवन भर साथ रखूंगा। सफेद जर्सी में खेलना निजी अनुभव होता है। यह शांत संघर्ष है, लंबे दिन और छोटे पल हैं, जिन्हें कोई नहीं देखता लेकिन वे हमेशा आपके साथ रहते हैं। टेस्ट मैचों को खेलने के लिए बहुत शारीरिक और मानसिक ताकत की जरूरत होती है। भले ही विराट को दुनिया के सर्वश्रेष्ठ फिटनेस वाले खिलाड़ियों में शुमार किया जाता है पर बहुत संभव है कि वह पांच टेस्ट की सीरीज खेलने के लिए अपने को मानसिक रूप से मजबूत न पाते हों।

-मनोज चतुर्वेदी

(ये लेखक के अपने विचार है)

वर्ग पहेली 5736

1	2	3	■	4	5	■	■
6			7			8	■
■	■	9		■	■	10	11
■	12			■	13		
14			■	15			■
16		■	17	■		■	18
■	19			■	20	21	
22		■		■	23		

संकेत: बाएं से दाएं

1. 22 जून 1906 को इस देश ने अपना ध्वज अपनाया (3)
4. प्रतिबिंब, प्रतिरूप, शनिमाता (2)
6. शीघ्रता, अतिशीघ्र, आंख झपकते (7)
9. सिलवट, सिकुडन, शक्ति (2)
10. एक नक्षत्र जिसमें पांच तारे है (2)
12. अलंकृत होना, शोभित होना (3)
13. छुप जाना, भागना, पलायन (3)
14. कमची, चाप, स्प्रिंग, कमान (3)
15. सौत, सहपत्नी, प्रतिकूला (3)
16. पराग के कण, भूल, गर्द (2)
19. प्रेरणा उत्पन्न करने वाला, प्रणोदक , संचलनकर्ता (3)
20. नामधारण करने वाला, नामधारी, नामयुक्त (3)
22. ताश के खेल का एक प्रकार (2)
23. घटना, मुकदमा, संदर्भ (3)

ऊपर से नीचे

1. झाड़ देना, बुहारना (अंग्रेजी) (2)
2. कश्मीर की प्रसिद्ध झील (2)
3. वह चोरी जो दीवार में बड़ा छेद करके हुई चोरी (5)
4. मुद्रत प्रति, सादृश्य आभास, छापीगिरी (2)
5. हिमालय पर्वत का एक जंगली बैल जिसकी पूंछ का चमर बनता है (2)
7. झलाई करना, टांका लगाना (3)
8. यह ईरान की राजधानी है (4)
11. हैसियत, परत, भूपर्पटी, मानक (2)
12. मिलनसार, लोकप्रिय, लोकप्रेमी (5)
13. वह गद्य या पद्य का लेख जो किसी विजय केसुअवसर पर लिखा जाए (5)
14. महसूल, टैक्स, हाथ, हस्त (2)
17. यह थाना देश की राजधानी है (3)
18. रूक-रूक कर अस्पष्ट उच्चारण करके बोलने वाला वाला (3)
21. मेरा या मेरी (संस्कृत) (2)

वर्ग पहेली 5735 का हल

ब्रा	जी	ल	■	सा	■	र	स
ड	■	ग	■	ग	ज	ब	ल
का	नू	न	■	■	मी	■	व
स्टिं	■	व	क्र	■	र	प	ट
ग	ज	ट	■	फां	■	ट	■
■	य	■	आ	स	पा	स	■
शू	द्र	■	ब	■	र	न	वे
र	थ	■	रू	स	■	■	णी

सुडोकू पहेली क्रमांक- 5736

	4			1			6	
9		6	5		2			4
						9	5	
3	2						8	
1			7	5	9			2
	9						1	5
	7	4						
6			4		8	5		1
	5			2			9	

नियम : प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक हैं, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी व खड़ी पंक्ति में एवं 3x3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।

सुडोकू पहेली क्र. 5735

2	5	4	8	9	7	6	3	1
3	6	7	2	4	1	9	8	5
8	1	9	3	6	5	7	4	2
7	4	8	1	3	6	2	5	9
6	2	1	5	8	9	4	7	3
5	9	3	7	2	4	1	6	8
4	8	2	6	1	3	5	9	7
9	3	5	4	7	2	8	1	6
1	7	6	9	5	8	3	2	4